PART-**1**

यूनानी भूगोलवेत्ता- अरस्तू

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers)

पृथ्वी के विभिन्न भागों के पर्यावरण और उनके निवासियों की जीवन पद्धति पर वर्णनात्मक लेखन का आरंभ यूनान में नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हो गया था । तत्कालीन महाकवि होमर (Homer) की दो काव्य रचनाओं में महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। इसके पश्चात् के वर्षों में थेल्स (Thales), अनेग्जीमैण्डर (Anaximander), हेकैटियस् (Hecataeus), हेरोडोटस (Herodotus), अरस्तू (Aristotle), थियोफ्रेस्टस (Theophrastus), इरेटोस्थनीज (Eratosthenes), पोलीबियस (Polybius), हिप्पारचुस (Hipparchus), पोसिडोनियस (Posidoneus) आदि प्रमुख यूनानी विद्वानों ने भौगोलिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अग्रांकित पंक्तियों में इन यूनानी विद्वानों के योगदानों की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

(7) अरस्तू (Aristotle)

प्रख्यात यूनानी विद्वान अरस्तू (384-322 ई० पू०) एक महान दार्शनिक होने के साथ ही एक राजनीतिशास्त्री, जीवविज्ञानी और भुगोलवेत्ता भी थे। प्लेटो के शिष्य अरस्तू ने प्लेटो से भिन्न आगमनात्मक अध्ययन पद्धति का समर्थन किया। वे तथ्यों के प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर सिद्धान्त प्रतिपादन को सर्वोत्तम पद्धति मानते थे। प्लेटो की भांति अरस्तू का भी विश्वास था कि संसार एक सोदुदेश्य ईश्वरीय रचना है और विश्व में होने वाले सभी परिवर्तन ईश्वरीय नियोजन के ही परिणाम होते हैं। इस प्रकार अरस्त सोद्देश्यवाद विचारधारा के पोषक थे।

अरस्तू ने गणितीय भूगोल के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान दिया था। उन्होंने पृथ्वी की आकृति तथा पृथ्वी के कटिबंधों का तथ्यपूर्ण और सोदाहरण वर्णन किया है। ध्यातव्य है कि उच्च स्तरीय विचारक होते हुए भी प्लेटो और अरस्तू की पहचान भौगोलिक ज्ञान के प्रवर्तक के रूप में नहीं है।